Year - 02 Volume-9 September -2021

ISSN: 2582-6557

UGC APPROVED

JANAMAT POWER RESEARCH JOURNAL

A MONTHLY RESEARCH JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY

EDITOR- DR. MANISHKANT JAIN

Janmat power research foundation & publication

EMAIL ID- janmatpower@gmail.com

N: 2582-6557 RNI -MP/BIL/2020/78687

JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL
A MONTHLY RESEARCH JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY
NATIONAL PEER-REFERRED,REVIEW JOURNAL, INDEXING &IMPACT FACTOR-5.2

CONTENTS

S.NO	PAPER TITLE	AUTHOR'S NAME	P.NO
01	Roll of social media in education and it's impact on the process of learning	Preeti Ahluwalia Dr.Vinita Joshi	1-8
02	Venture capital and its impact on indian economic growth	Preeti Ruhela	10-14
03	Learning styles and thinking styles of prospective teachers and its relation to teaching competency	VinitaJoshi	15-20
04	राजस्थान में लुघ और कुटीर उद्योग के विकास में हस्तशिल्प का योगदान का अध्ययन	किरणलता शर्मा डॉ राजेश कुमार वैष्णव	21-26
05	ठोस अपशिष्ट का प्रसंस्करण-आर्थिक स्रोत का नया जरिया	प्रियंका वर्मा	27-32
06	डॉ अलका सरावगी के उपन्यास में नारी के बदलता स्वरूप का अध्ययन	श्रीमति पूनम नामदेव डॉ अनीता सोनी ★	33-37
07	आहार चिकित्सा का विवेचनात्मक अध्ययन	विकास भट्ट प्रो.(डॉ) अनिल थपलियाल	38-45

ISSN-2582-6557 RNI-MP/BIL/2020/78687
JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL
A MONTHLY RESEARCH JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY
NATIONAL PEER- REFEREED,REVIEW JOURNAL,INDEXING & IMPACT FACTOR 5.2

डॉ अलका सरावगी के उपन्यास में नारी के बदलता स्वरूप का अध्ययन

श्रीमति पूनम नामदेव*
डॉ अनीता सोनी**

प्रस्तावना

नवे दशक मे भारतीय साहित्य मे एक महत्वपूर्ण बदलाव नारी विमर्श के कारण आया, जिसके कारण नारी ने साहित्य के केन्द्र बिन्दु से होकर मुख्यधारा मे अपनी जगह बनायी। हिन्दी कथा-साहित्य इससे सर्वाधिक प्रभावित हुआ। वर्तमान दौर मे स्त्री चेतना से जुड़ी स्त्री मुक्ति और अस्मिता के संकट व पहचान के सघर्ष को व्यक्त करने वाली अनेकानेक कथा लेखिकाएँ हैं, जिनमें उषा प्रियंवदा, चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, कृष्णा सोबती, शशिप्रभा शास्त्री, मेहरुन्निसा परवेज, मन्नू भंडारी, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, मृणाल पांडेय, सूर्यबाला, राजी सेठ, चन्द्रकान्ता, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, चित्रा मुद्गल, गीतांजलि श्री, अलका सरावगी, अर्चना वर्मा, अनामिका आदि प्रमुख हैं। इन महिला कथाकारों में अलका सरावगी एक ऐसी लेखिका हैं, जिन्होंने अपने उपन्यासों 'कलिकथा वाया बाइपास' (1998) 'शेष कादम्बरी' (2001), 'कोई बात नहीं' (2004) और 'एक ब्रेक के बाद' (2008) मे स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं और उसकी नितान्त बदली हुई तस्वीर को सामने रखा है। अलका सरावगी चरित्रों और देशकाल को प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत करने वाली कथाकार हैं। उनके उपन्यास स्त्री अस्मिता के नये प्रश्न हमारे सामने रखते हैं।

आधुनिक हिन्दी उपन्यासों की नवीनतम् धारा को आधुनिकता बोध का उपन्यास कहा जा सकता है। औद्योगीकरण, बदलते हुए परिवेश, भ्रष्ट व्यवस्था, महानगरीय जीवन और यान्त्रिक सभ्यता केपरिणाम से आज जीवन में अकेलापन एवं निराशा घर कर गई है। कुण्ठा, संत्रास एवं असुरक्षा की भावना ने हमें संत्रस्त कर दिया है। बीसवीं सदी के नवें दशक में भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण बदलाव नारी विमर्श के कारण आया, जिसके कारण नारी ने साहित्य के केन्द्र बिन्दु से होकर मुख्य धारा में अपनी जगह बनायी। हिन्दी कथा साहित्य इससे सर्वा धिक प्रभावित हुआ। वर्तमान दौर में स्त्री चेतन से जुड़ी स्त्री मुक्ति और अस्मिता के संकट व पहचान के संघर्ष को व्यक्त करने वाली अनेकानेक कथा लेखिकाएँ हैं जिनमें अलका सरावगी का नाम प्रमुख साहित्यकारों में से एक है।
हिंदी साहित्य के इतिहास का अध्ययन करने के पश्चात् यह बात स्पष्ट हो जाता है कि आज जो बहुप्रचलित तथा लोकप्रिय विधा 'उपन्यास' है वह आधुनिक काल में ही आरम्भ हुई। हिंदी उपन्यास का प्रारंभिक युग सामान्य जन जीवन से दूर रहा। इस तथ्य को कभी भी अस्वीकार नहीं किया जा

*शोधार्थी
**शोध निदेशक,प्राध्यापक,जे.एच.पीजी गवर्मेंट कॉलेज,बैतूल(मप्र)

सकता। जासूसी, तिलस्मी, मनोरंजन प्रधान उपन्यास प्राम्भ मे जरूर लिखे गए परन्तु साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं है। इसलिए आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने लिखा है "केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए, उसमे उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए"।

अलका सरावगी की कथा साहित्य

अलका सरावगी का यों तो पूरा कथा-साहित्य ही आजादी के बाद के भारतीय मध्यमवर्गों के सबसे संचरणशील हिस्सों के गतिविज्ञान को समझने का प्रिज्म है,किन्तु 1998 ई में प्रकाशित उनका उपन्यास 'कलि कथा : वाया बाइपास' संभवतः हिंदी का सबसे ठेठ उत्तर आधुनिक उपन्यास है. अलका सरावगी के उपन्यास पाठक को बाहर की दुनिया में सीधे नहीं ले जाते (हालांकि पाठक की पाठ से बाहर अवस्थिति के कारण वह इससे बच नहीं सकता) बल्कि कथा की अपनी दुनिया की ओर खींचते है. इन उपन्यासों की अंतर्वस्तु इस प्रकार नियोजित है की वह अपनी किसी भी विशेषता (सत्यता, वैधता, रोचकता, मूल्यवता आदि) के लिए यथार्थ के सदृश्य पर निर्भर नहीं है. कथा की संरचना ही उसकी अंतर्वस्तु है. यह संरचना ही पाठक को लगातार अपनी ओर खींचे रहती है और वह कथा के स्थापत्य मे ही खो जाता है।

अलका सरावगी के उपन्यास में नारी चित्रण

अलका सरावगी ने अपने पहले ही उपन्यास 'कलि-कथा: वाया बाइपास' में लेखिका ने डेढ़ सौ साल के मारवाड़ी समाज का चित्रण कर समाज में स्त्री की स्थिति को दर्शाया है। कलिकथा वाया बाइपास' (अलका सरावगी) उपन्यास सन् 1998 में प्रकाशित हुआ था। सन् 98 में प्रकाशित होने वाले इस उपन्यास का कथा फलक सन् 2000 तक जाता है और बैकड्रॉप में और भी पीछे 1940 तक। लगभग साठ सालों का समय इस उपन्यास में बँधा हुआ है। चालिस से लेकर साठ के दौरान राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित हुईं और बहुत सारे राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय एजेंडा बदल गए। आज नए एजेंडा हमारे सामने हैं। नए तरह के विमर्श हमारे सामने हैं। चूँकि साठ साल की अवधि में यह उपन्यास फैला हुआ है, हमें यह देखना होगा कि यह उपन्यास इन विमर्शों को कवर कर पाता है या नहीं, और अगर करता है तो किस रूप में करता है?

MONTHLY RESEARCH JOURNAL

टेकनीक के रूप मे इस उपन्यास में जिन चीजों का इस्तेमाल किया गया है उन्हें गौर से देखना चाहिए। यहाँ इतिहास का इस्तेमाल है, स्मृति का इस्तेमाल है। इतिहास और स्मृति के बीच वर्तमान भी स्थित है। एक विधा के रूप में उपन्यास को जब हम पढ़ते हैं तो इतनी उम्मीद इस विधा से होती है कि यह यथार्थ का, सच का, तथ्य का, थोड़ा बहुत परिचय जरूर देगा। साथ ही साथ हम यह भी उम्मीद करते हैं कि किसी उपन्यास का जो देश-काल है वह कम-से-कम हमारे परिचय के दायरे में हो। चाहे वह अतीत के जरिए आए या वर्तमान के संदर्भों से आए। भविष्य के तरफ भी उसकी निगाह हो। जैसा कि डी.पी.मुखर्जी ने कहा है कि उपन्यास अगर स्मृति के जरिए ही लिखा जाना है

ISSN-2582-6557 RNI-MP/BIL/2020/78687
JANMAT POWER NATIONAL RESEARCH JOURNAL
A MONTHLY RESEARCH JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY
NATIONAL PEER- REFEREED REVIEW JOURNAL, INDEXING & IMPACT FACTOR-5.2

तो वह आशाजनक स्मृति का संचार करने वाला होना चाहिए, तभी हम भविष्य की उन्मुक्तता को, सही दिशा को इंगित कर पाते है।

यह उपन्यास एक तरफ कलिकथा है, दूसरी तरफ वाया बाईपास है। कलकते की कथा और साथ-साथ किशोर बाबू की भी कथा, जो इस उपन्यास के नायक है। मैं कलकते में ही जन्मी, पली-बढ़ी हूँ। जब यह उपन्यास प्रकाशित हुआ था तो इसकी खूब चर्चा हुई थी। प्राय: सभी लोगों ने इस पर कुछ न कुछ लिखा है। नामवरजी ने इस उपन्यास के संदर्भ में कहा कि पिछले पचास साल में यह सबसे महत्वपूर्ण उपन्यास लिखा गया है। पुरुषसतात्मक समाज में एक विधवा स्त्री का अच्छे कपड़े पहनने भर से ही मर्यादा खत्म होती है। बंगाल (कलकता) में रहते हुए किशोर बाबू को मारवाड़ी समाज की स्त्रियों की पिछड़ी स्थिति पर शर्म महसूस होती है। अपने समाज की रूढियों - घूंघट प्रथा, नाक छिदवाना आदि का विरोध करते है। किशोर बाबू अपनी लड़कियों को पढ़ाने का फैसला लेते है, किन्तु अपनी पुरुषसतात्मक मानसिकता से उभर नही पाते है, "सारी लड़कियां को उन्होंने कालेज भेजा- यह अलग बात है कि उनमें से दो ने ही बी.ए. पास किया बाकी सबकी बीच में ही शादी हो गई। उन्हें पढ़ाया-लिखाया, पर लड़कियों को रखा हमेशा एक सीमा में। कभी उन्हें बरामदे में खड़े नहीं होने नहीं दिया ताकि सड़क के लोग उन्हे देख सके। बस सड़क से उन्हें इतना ही जुड़ने दिया कि वे घर के दरवाजे से फुट-पाथ पार कर बाहर खड़ी गाड़ी में बैठ जाए। कभी लड़कियों को अपनी सहेलियों के घर नहीं जाने दिया।

अपने दूसरे उपन्यास 'शेष कादम्बरी' में लेखिका जहाँ एक ओर स्त्री मन के कोमलतम उद्‌गारों को अभिव्यक्ति देती है, वहीं पूर्ण संवेदना तथा साहस से स्त्री शोषण की विभीषिका को भी उद्‌घाटित करती है। 'शेष कादम्बरी' के माध्यम से अलका सरावगी ने तीन पीढ़ियों के द्‌वारा स्त्री जीवन की विविध समस्याओं का यथार्थ रूप ही सामने नहीं रखा है, वरन् अबला कही जाने वाली औरत के सशक्त व जुझारू व्यक्तित्व को भी दर्शाया हैं। उपन्यास की प्रमुख पात्र रूबी दी के माध्यम से कलकता के मारवाड़ी समाज में स्त्री की स्थिति और भारतीय परिदृश्य में नारी जागृति के ऐतिहासिक विवेचन को देखा जा सकता है। रूबी दी उपन्यास में एक ऐसे पात्र के रूप में उपस्थित है जो न पुरुष शासन से शोषित है, न किसी से दमित जीवन जीती है, वह स्वतंत्र और आत्मनिर्भर जीवन जीती है। रूबी के माध्यम से अलका सरावगी ने स्त्री से जुड़े विविध पहलुओं जैसे स्त्री की स्वतंत्रता, यातनातय जीवन जीते हुए संघर्षों में घिरी स्त्री से जुड़े प्रश्नों को उभारा है।

स्त्री के जीवन की नियति की ओर संकेत करते हुए लिखा है,"ऐ औरत तूने जब भी किसी कोने में पुरुष से अलग अपना कुछ बनाया है, तो तुझे इसकी कीमत देनी पड़ी है। लेकिन तुम इस 'अपने' पैसे की, जो कभी तुम्हारा नहीं था और न कभी तुम्हारे हाथ में था, आखिर कितनी कीमत चुकाओगी?" इस उपन्यास में मारवाड़ी समाज का सच अन्तर्बाह्य अनेक रूपों में खुलता है। रूबी दी की दुनिया का सच हमारे समाज का सच सिद्ध होता है,"क्यों नहीं सोचा कि सुधारक आप लड़के के ब्याह करते

समय हो सकते हैं, लड़की का ब्याह करते समय नहीं। आप दुनिया की रस्मों को न मानकर अपने को दुनिया से अलग और ऊपर समझ सकते हैं, पर उससे आप दुनिया से बच नहीं सकते।"जीवन की ऐसी ही अनेक चोटें खाकर रूबी दी परामर्श संस्थान के द्वारा स्त्री मात्र का दुख दूर करने का बीड़ा उठाती है। रूबी दी का जीवन के प्रति दृष्टिकोण एक प्रेरणादायी व्यक्तित्व के रूप में सामने आता है, जीवन में तमाम तरह की तकलीफों, कष्टों व अकेलेपन को झेलती हुई वे मानती हैं कि जीवन है तो उसका कोई अर्थ है जरूर, समझ में आए या न आए। उसे अपने मन में खत्म करना कभी सही नहीं हो सकता।"

उपन्यास के अन्य पात्र सविता, माया बोस, फरहा, कादम्बरी आदि स्त्री अस्मिता से जुड़े प्रश्न उठाने और साथ ही स्त्री के यथार्थ की आवाज बुलन्द करने में सक्षम हैं। समय के साथ स्त्री की सामाजिक-सास्कृतिक स्थिति मे आए बदलाव को लेखिका ने बारीकी से पकड़ा है। अलका सरावगी का 'कोई बात नहीं' उपन्यास मोटे तौर पर शारीरिक रूप से अक्षम एक बेटे शशांक और उसकी माँ के प्रेम और दुख की साझीदारी की कहानी है। शशांक का जीवन कई तरह की कथाओं से भरा हुआ है। शशांक के जीवन की कथाओं के माध्यम से अलका सरावगी शशांक की माँ, मौसी, दादी आदि स्त्रियों की जिन्दगी की कहानियाँ कहती हुई समाज में स्त्री की स्थिति पर प्रकाश डालती है। शशांक की दादी का विवाह पन्द्रह साल की उम्र में एक रूढिवादी परिवार में हुआ जहाँ उन्हें अपने कमरे में जाने के लिए सास-ससुर के कमरे से होकर जाना होता था। ऐसी स्थिति में उन्हें अपने कमरे में जाने के लिए भी किसी के साथ की जरूरत थी।

अपने उपन्यास 'एक ब्रेक के बाद' में अलका सरावगी द्वारा कार्पोरेट दुनिया के स्त्री चरित्रों का चित्रण अपने आप में स्त्री-विमर्श को नई दिशा देता है। इस उपन्यास में भट्ट और उसकी पत्नी के माध्यम से अलका सरावगी स्त्री के सहने के शक्ति पर प्रकाश डालती हैं, "भट्ट जानता था कि उसकी पत्नी उससे वह सवाल नहीं पूछेगी जो हर घड़ी पूछना चाहती थी- "और कितना दुख दोगे मुझे ? या फिर 'और कितना भटकोगे और भटकाओगे इस तरह ?"

सारांश

अलका सरावगी की विशिष्टता यह है कि वे स्त्री की प्रचारित और प्रचलित छवि को तोड़ती हैं। अलका सरावगी अपने उपन्यासों के माध्यम से पुरुषों के द्वारा स्त्री पर किये गये शोषण के साथ स्त्री जीवन के अन्य पक्षों पर भी सोचने के लिए मजबूर करती हैं। जिससे उनके उपन्यास स्त्री जीवन की समस्याओं को उकेरने वाले महत्वपूर्ण दस्तावेज बन जाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1-अलका सरावगी, कली-कथा: वाया बाइपास, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा), तीसरा संस्करण, 2007, पृ.60

2-अलका सरावगी, कली-कथा: वाया बाइपास, पृ.61

3-अलका सरावगी, शेष कादम्बरी, पृ.78

4-अलका सरावगी, कोई बात नहीं, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2004, पृ.35

5-अलका सरावगी, एक ब्रेक के बाद, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2008, पृ.75

[15] वही, पृ. 76